करुणानिधान श्रीरामकी अतिशय प्रिय जगज्जननी सीताजी

सरस्वती मल्लिक
(rammmallik@gmail.com)

ISBN: 978-1-7362088-2-3

जगज्जननी सीताजी युग युगांतर से एक आदर्श नारी के रूप में पूजनीया रही हैं। वह मर्यादा पुरुषोत्तम रामकी अतिशय प्रिय संगिनी थी। दोनों के पारस्परिक संवंध की कथा का गोस्वामी तुलसीदास के श्रीरामचरितमानस में विस्तृत और मनोरंजक वर्णन है। अन्य रामकथाओं में इसको महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यह लेख मूलत: श्रीरामचरितमानस पर आधारित है।

1. भूमिका

रामचरित मानस में सीताजी और उनके करूणानिधान रामजी के पारस्परिक संबंध का वर्णन सर्वप्रमुख और मनोरंजक है। तुलसीदासजी कहते हैं कि जगज्जननी सीता करूणानिधान राम की अतिशय प्रिय हैं और दोनों अभिन्न हैं। मिथिला नरेश की पुष्पवाटिका में प्रथम मिलन में दोनों स्नेह में बँध गये। विवाह के पश्चात राम एक राजकुमार से मर्यादा पुरुषोत्तम हो गये और सीताजी के करुणानिधान भी। उनके जीवनमें सुख दुख आये परन्तु उनके प्रेममें कमी नहीं आई। वनबास में साथ रहे। वनमें राक्षसों का संकट देखा तो रामजी ने सीताजी को अग्निदेव के पास रखा और लीला में माया सीताजी को प्रस्तुत किया। रावण द्वारा सीता हरण के बाद सीताजी के वियोग में दु:खी होकर भटकते हुये खग-मृग से उनका पता पूछते रहे, सदैब उन्हींका स्मरण करते रहे। रावण का संहार कर सीता जी को मुक्त किया और अग्निदेव से वास्तविक सीताजी को लेकर अयोध्या वापस आये। अवध का राज्य सँभाला सीताजी को रानी बनाया। बाद में जनसमुदाय में उनपर लांछन लगाये गये। गर्भवती सीताजी वाल्मीकि मुनि के आश्रम मे रहने लगी। वहॉ उन्होंने दो जुड़वा पुत्रों को जन्म दिया। रामजीने सीताजी को राजसभा में अपनी पवित्रता प्रकट करने का आदेश दिया। सीताजी अपनी धरती माता की गोदमें बैठकर चली गई। इन कथाओं में विविधता है और उनपर अनेक विवाद भी। परन्तु सीताजी और उनके करुणानिधि रामके के बीच के अतिशय प्रेम और पारस्परिक विश्वास पर कभी कोई संदेह नहीं है।

2. सीताजी का स्वरूप

जगज्जननी सीता एक आदर्श नारी के रूपमें युगों से पूजी जाती हैं। तुलसीदासजी रामचरितमानस के प्रारंभ में सीताजी की वंदना और उनकी महिमा का वर्णन करते हैं।

जनक सुता जग जननि जानकी। अतिशय प्रिय करुनानिधान की॥
ताके जुगपद कमल मनावउँ। जासु कृपा निरमल मति पावउँ॥ १.१७.७-८

श्रीजनकजीकी पुत्री, जगज्जननी और करुणानिधान श्रीरामजीकी अतिशय प्रिया श्री सीताजी के दोनों चरण-कमलों में वंदना करता हूँ जिनकी कृपासे निर्मल बुद्धि प्राप्त होती है। सीताजी श्री जनकजी की पुत्री है और उनके समान देहाभिमान रहित और ज्ञान निधान हैं, सृष्टिकर्ता और आदिक्शक्ति के रूपमें जगज्जननी हैं और भगवान राम की पुरातन संगिनी के रूप में करुणानिधानकी अतिशय प्रिय हैं। जो सीताजी की उपासना करेगा उसकी वुद्धि के विकार दूर होंगे।

मानस बालकांड के मंगलाचरण में भी सीताजीकी वंदना की गई है।

उद्भव स्थिति संहार कारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभाम्॥ ५॥

उत्पत्ति , स्थिति (पालन) और संहार करनेवाली, क्लेशों को हरनेवाली तथा सम्पूर्ण कल्याणों को करनेवाली श्री रामजी की प्रियतमा सीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

तुलसीदासजी सीताराम की संयुक्त वंदना में कहते हैं कि दोनों अभिन्न हैं दोनों में कोई भेद नहीं है।

गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ॥ १.१८

जैसे वाणी और अर्थ दो अलग अलग शब्द हैं पर दोनों में कोई भेद नहीं है और जल और बीचि (जल में उठने वाली तरंगें) भले हीं अलग शब्द हैं पर दोनों में रंचमात्र कोई भेद नहीं है इसी प्रकार सीताजी और रामजी भी वास्तविक रूपमें अभिन्न हैं। मैं श्रीसीतारामजी के चरणों की वंदना करता हूँ जिन्हें दीनजन परम प्रिय हैं।

3. जगज्जननी सीताजी

तुलसीदासजी वंदना में सृष्टि की रचयिता सीताजी को जगज्जननी कहते हैं। साक्षात महालक्ष्मी ही सीताजी के रूप में अवतरित हुई हैं। स्वायम्भुव मनु और शतरूपाजी की पुत्र प्राप्ति की तपस्या पर उनके समक्ष दो रूप प्रगट हुए - भगवान राम और जगज्जननी सीता। भगवानने उनको वरदान दिया कि वे उनके पुत्र के रूपमें अवतार लेंगे। फिर भगवान ने सीताजी का परिचय दिया कि ये आदिशक्ति हैं। इनके द्वारा ही सृष्टि का निर्माण हुआ है और जब मैं अवतार लूँगा तो ये मेरी माया शक्ति भी मेरे साथ आवेंगी।

आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया। सोउ अवतरिहिं मोरि यह माया ॥ १.१५१.४

आदिशक्ति और सृष्टि की रचयिता जगज्जननी सीता जी की अनन्त शक्तियों और सिद्धियोंका वर्णन है। वाल अवस्था में हीं उन्होंने पूजाघर में रखे महान शिवधनुषको एक हाथसे उठा लिया था जिसे स्वयंवर में रामके सिवा सारे राजा एक साथ मिलकर भी नहीं उठा सके। वह साक्षात् महाशक्ति हैं और तेज़ोमयी हैं। लंका में अकेली राक्षस-राक्षसियों के बीच वंदिनी सीता जी ने रावणको उसकी अनर्गल बात पर फटकार लगाकर चुप करादिया। उनको ज़रा भी भय नहीं हुआ। रावण को कहा

सठ सुनें हरि आनेसि मोही। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥५.८.९

सीताजी धरतीकी पुत्री थी और उनके स्वभाव में उदारता,धैर्य , शालीनता, और सहिष्णुता थी। वह शान्ति स्वरूपा है इसे उनकी दुर्बलता नहीं समझनी चाहिये। मानसमें सीताजी की सिद्धियों का भी उल्लेख है। विवाह के अवसर पर सीताजीने सिद्धियों को बुलाकर आदेश दिया कि वरातियों के सम्मान और सुविधा के प्रबंध करें। भरत अयोध्या से सारे समाज के साथ चित्रकूट आये। उनमें महाराज श्री दसरथ की रानियाँ भी थीं। सीताजी ने जितनी सासुएँ थी उतने ही वेष बना लिये और प्रत्येक सेवा में संलग्न हो गई।

4. सीता राम का मिलन और उनके अतिशय प्रेम की कथा

सीताजी और राम जी मिथिला नरेश की पुष्पवाटिका में मिलन के बाद स्नेह में बँध गये। प्रात:काल गुरु के लिये फूललाने पुष्पावाटिका में गए। वहाँ सीताजी भी अपनी सखियों के साथ गौरी मंदिर में पूजा कर वापस आ रही थी तो एक सखी ने कहा कि दो राजकुमार वाग देखने आये हैं। उनकी सुंदरता वर्णनातीत है। सीता जी को बहुत उत्कंठा हुई और रामके दर्शन की उत्कट लालसा हुई। उन्हें नारदजीके वचन और रामसे अपने पुरातन प्रेमका भी स्मरणहुआ। वह सखियों के साथ कुमारों को देखने के लिये आगे आई और चारों ओर घूम घूम कर देखने लगी।

कंकण (हाथों के कड़े),करधनी और पायजेब के शब्द सुनकर श्री रामचन्द्र जी हृदय में विचार कर लक्ष्मणसे कहते हैं (यह ध्वनि ऐसी आ रही है) मानो कामदेव ने विश्व को जीतने का संकल्प करके डंके पर चोट मारी है॥ ऐसा कहकर श्री रामजी ने फिर कर उस ओर देखा। श्री सीता जी के मुख रूपी चन्द्रमा (को निहारने) के लिए उनके नेत्र चकोर बन गए। सुंदर नेत्र स्थिर हो गए (टकटकी लग गई)। सीता जी की शोभा देखकर श्री राम जी ने बड़ा सुख पाया। हृदय में वे उसकी सराहना करते हैं,किन्तु मुख से वचन नहीं निकलते। यों श्री राम जी छोटे भाई से बातें कर रहे हैं,पर मन सीता जी के रूप में लुभाया हुआ उनके मुख रूपी कमल के छबि रूप मकरंद रस को भौंरे की तरह पी रहा है॥

उधर सीता जी चकित होकर चारों ओर देख रही हैं। मन इस बात की चिन्ता कर रहा है कि राजकुमार कहाँ चले गए।

लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी॥

नेत्रों के रास्ते श्री रामजी को हृदय में लाकर चतुर शिरोमणि जानकी जी ने पलकों के किवाड़ लगा दिए (अर्थात नेत्र मूँदकर उनका ध्यान करने लगीं) । जब सखियों ने सीता जी को प्रेम के वश जाना, तब वे मन में सकुचा गईं, कुछ कह नहीं सकती थीं॥ उसी समय दोनों भाई लता भवनों निकले। सखीने कहा कि गौरी का ध्यान फिर कर लेना अभी तो सामने देख लो। सीताजीने ऊपर से नीचे तक रामजी की शोभा देखी और पिता का प्रण याद कर उनके मन में बड़ा क्षोभ हुआ कि पिताजी ने व्यर्थ ही इतनी कठिन प्रतिज्ञा की। सीताजी फिर लौटकर भवानीजी के मंदिर में गई॥" जानि कठिन सिवचाप बिसूरति " वह चिंतित हैं कि इन सुकुमार राजकुमार से शिवधनुष कैसे टूटेगा। देवी की मूर्तिके सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी।

*मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें॥*१.२३५.३

भवानी ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी।नारदजी की भविष्यवाणी अवस्य सत्य होगी। भगवान राम करूणानिधान हैं और वे तुम्हारे शील और स्नेह को जानते हैं। वे तुम्हारी इच्छाको पूरी करेंगे। इस पर सीताजी बहुत प्रसन्न मनसे अपने घर को वापिस लौट चली। उसके बाद का प्रकरण सीता स्वयंवर, सीता राम विवाह , अयोध्या निवास आदि सर्व विदित हैं। दोनों के पारस्परिक संबंध की कुछ कथा संक्षेप में वर्णित है। रामजी वन जाने के समय सीताजी को वन के कष्ट और सास ससुर की सेवा का महत्त्व समझाकर अयोध्या में रहने को कहते हैं। परंतु सीताजी भाव विह्वल होकर साथ ले जाने की विनती करती है। वह कहती है कि तुम्हारे विना स्वर्ग भी नर्क के समान है। जैसे विना जीव के देह या विना पानी के नदी है वैसे हीं विना पति के स्त्री है। आपके साथ वनमें कोई कष्ट नहीं होगा और क्षण-क्षण आपके चरणकमलों को देखते रहने से मार्ग में चलने में कोई थकावट नहीं होगी। अंत में सीताजी की प्रार्थना पर रामजी उन्हें साथ वन ले जाते हैं। श्रीरामचन्द्रजी का सीताजीके प्रति अतिशय प्रेम रामायण में प्रदर्शित है। विशेषकर सीताजी के वियोग में उनका रोना और विलाप करना सबको रुला देता है।

राम जी सीताजी के वियोग में दु:खी होकर भटकते हुये खग-मृग से उनका पता पूछते हैं

हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥

हे पक्षियों ! हे पशुओं ! हे भौरों की पंक्तियों ! तुम ने कहीं मृग नयनी सीता को देखा है ?

हनुमानजी सीताजी की खोजमें लंका जाते हैं तो रामजी उनके लिये संदेश भेजते हैं जिसमें अपनी अन्तर्व्यथा का विस्तृत वर्णन करते हैं। अंतमें कहते हैं,

तत्व प्रेम कर मम अरू तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥ ५.१४.३
*सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥*५.१४.४

मेरे और तेरे प्रेम का तत्व (रहस्य) एक मेरा मन ही जानता है। और वह मन सदा तेरे ही पास रहता है।बस,मेरे प्रेमका सार इतनेमें ही समझ ले।

हनुमानजी वापस आकर जब सीताजी का समाचार सुनाया तो उनका दुख सुनकर रामजी के कमलनेत्रोंमें जल भर आया।

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अपना। भरि आये जल राजिव नयना॥ ५.३१.१

रामजी ने अविलंब सेना का संगठन किया, समुद्र पर सेतु का निर्माण किया। लंका पर चढ़ाई कर रावण का संहार कर सीताजी को मुक्त कराया। माया सीता को अग्निदेव को सौंपकर वास्तविक सीता को प्रकट किया।

सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्हिं अस्तित्व करजोरी ।।
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपानिकेता ।।

अयोध्या नगरी में उनका भव्य स्वागत हुआ श्रीरामजी के राजतिलक के लिये नगर की सुन्दर सजावट की गई। श्री रामजी और जनक जननी सीता जी ने सुन्दर वस्त्र और आभूषण धारण किये। श्रीरामजी के बायें जानकीजी राजसिंहासन पर विराजमान हुई। श्रीरामजीने हज़ारों वर्ष राज्य किया और करोड़ों अश्वमेध यज्ञ किये। सीताजी सदा पति के अनुकूल रहती थी। उन्होंने दो पुत्र लव और कुश उत्पन्न किये। लीला के संबरण पर जगज्जननी सीताजी अपने करुणानिधि श्रीराम के साथ स्वधाम को चली गई।

दोनों की यह मनोरम प्रेमकथा गोस्वामी तुलसीदास रचित राम चरित मानस में विस्तार से वर्णित है और अध्यात्म रामायण, पद्म पुराण और अन्य राम कथाओं में भी कहा गया है। कुछ रामकथामें इस संबंध पर विवादास्पद विवरण हैं जिसे विद्वानोंने क्षेपक और अविश्वसनीय कहा है। इसपर संक्षेप में चर्चा निम्न लिखित है।

5. सीता की अग्निपरीक्षा

सीता की अग्निपरीक्षा का कोई प्रमाण वहीं मिलता ।वाल्मीकि रामायण मे विवरण है कि रावण के संहार के पश्चात सीताजी को रामजी के सामने प्रस्तुत किया गया। रामजी ने सीताजी के लंका वास पर उनके सामाजिक अप्रतिष्ठा का उल्लेख किया। सीताजी ने इसपर दुखी होकर लक्ष्मणजी से चिता तैयार करवाई और उसमें प्रवेश कर गई। ऋषि मुनि , देवतागण और वानर सेना सबों ने इसपर आक्रोश जताया और कहा कि सीताजी पवित्र हैं दोषरहित हैं। रामजी ने इसे स्वीकार किया और सीता जी के साथ अयोध्या लौटे। सीताजी ने कोई अग्नि परीक्षा नहीं दी न राम जी ने इसके लिये कहा।

6. सीता का बनवास और वाल्मीकि आश्रम में निवास

राज्याभिषेक के कुछ दिन पश्चात एक गुप्तचर ने रामजी को सूचना दी कि लोगों को सीताजी की पवित्रता में संदेह है क्योंकि वे रावण के यहाँ रही थी। इस कलंक से वंश को बचाने के लिये रामजी ने लक्ष्मण को आदेश दिया कि सीता को तपोवनमें छोड़ आयें। सीताजी उस समय गर्भवती थीं। वाल्मीकि ने उन्हें अपने आश्रम में प्रश्रय दिया जहाँ उन्होंने लव कुश नामक जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया। कुछ जगह उल्लेख है कि श्रीराम का सम्मान उनकी प्रजा के बीच बना रहे इसके लिए उन्होंने अयोध्या का महल छोड़ दिया और वन में जाकर वे वाल्मीकि आश्रम में रहने लगीं। श्रीरामचरितमानस इस कथा की पुष्टि नहीं करता है।

7. सीताजी का संसार से प्रयाण

माता सीता अपने पुत्रों के साथ वाल्मीकि आश्रम में ही रहती थीं। भगवान श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। उस यज्ञ में वाल्मीकिजी ने लव और कुश को रामायण सुनाने के लिए भेजा। राम ने जाना कि वे दोनों उनके के ही पुत्र हैं। तब राम ने सीता को कहलाया कि यदि सभा में आकर अपनी पवित्रता प्रकट करें। वाल्मीकि सीता को लेकर सभा में गए। सीता हाथ जोड़कर नीचे मुख करके बोलीं- 'हे धरती मां, यदि मैं पवित्र हूं तो धरती फट जाए और मैं उसमें समा जाऊं।' जब सीता ने यह कहा तब एक सिंहासन पृथ्वी फाड़कर बाहर निकला। सिंहासन पर पृथ्वी देवी बैठी थीं। उन्होंने सीता को गोद में बैठा लिया धरती में समा गईं। यह कथा श्रीरामचरितमानस में नहीं है जैसा कि ऊपर बताया गया है।

8. अंतिम टिप्पणी

यह है जगज्जननी श्रीसीताजी के करूणानिधानके अतिशय प्रेम की कथा। श्रीरामजी मर्यादा पुरुषोत्तम और आदर्श राजा के रूपमें तथा जगज्जननी सीताजी एक आदर्श नारी और पत्नी के रूप में युगयुगांतर से श्रद्धा के पात्र हैं। इनका पारस्परिक सम्बन्ध और प्रेम सबों के लिये अनुकरणीय है।

9. संदर्भ

1. श्रीरामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास
2. वाल्मीकि रामायण
3. विकिपीडिया - सीता और अन्य विभिन्न लेख